व्ही.टी. जोशी

अजातशत्रु पत्रकार

राधेश्याम शर्मा

जोशी जी का विलक्षण व्यक्तित्व था। कलम के धनी। लेखनी से कोई समझौता नहीं। कोई बड़े से बड़े पद पर बैठा हो, यदि गलत फैसला या कदम हो तो उनकी लेखनी चल पड़ती। ...आलोचना में भी कभी मर्यादा का उल्लंघन नहीं – स्वस्थ संतुलित आलोचना।

व्ही. टी. जोशी नहीं रहे। जनवरी के अंतिम सप्ताह में उनका बेंगलूरु में उनके अचानक देहांत होने का समाचार मिला तो मैं स्तब्ध रह गया। वे यद्यपि निवासी तो कर्नाट्क के थे-कन्नड़ भाषी। मुंबई, गोवा में पत्रकारिता करने के बाद ''टाइम्स ऑफ इंडिया'' ने उन्हें फरवरी 1965 में भोपाल भेज दिया। भोपाल क्या आए कि वे मध्यप्रदेश के अपने होकर रह गए। यहाँ सबके अपने बन गए। सबके प्रिय। कोई उनका शत्रु तो क्या विरोधी भी नहीं। सर्वप्रिय। वैसे भोपाल के बाद लखनऊ, हैदराबाद और 4-5 साल इस्लामाबाद (पाकिस्तान) में भी टाइम्स ऑफ इंडिया ने उन्हें नियुक्त किया। वहाँ पर भी उसी दमदारी और पूरी शिद्दत एवं शालीनता से कलम चलाई। पाकिस्तानी मामलों के विशेषज्ञ बन गए, लेकिन उन्हें और उनके पूरे परिवार को भोपाल एवं मध्यप्रदेश ऐसा भाया कि यहीं बस गए। भारत का हृदय-स्थल मध्यप्रदेश उनके हृदय में बस गया और वे यहाँ सभी के दिलों में बस गए।

विलक्षण व्यक्तित्व

जोशी जी का विलक्षण व्यक्तित्व था। कलम के धनी। लेखनी से कोई समझौता नहीं। कभी मैंने गुस्सा होते या ''टेम्पर लूज'' करते नहीं देखा। कोई बड़े से बड़े पद पर बैठा हो, यदि गलत फैसला या कदम हो तो उनकी लेखनी चल पड़ती। घमंड नहीं पर, अहंवादी के आगे झुके नहीं। सादगीपूर्ण, सरल जीवन। सदा हँसमुख सहयोगपूर्ण एवं हितैषी स्वभाव। कोई ऐब या अनावश्यक शान शौकत अथवा दिखावा नहीं। स्वाभिमान का पूरा ध्यान। आपातकाल में भी किसी की चिरौरी नहीं। आलोचना में भी कभी मर्यादा का उल्लंघन नहीं -स्वस्थ संतुलित आलोचना। एक बार तत्कालीन मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल ने खिलाफ खबर छपने पर जोशी जी के बारे में गलतफहमी पाल ली थी। कतिपय दरबारी और अखबारी जगत के कुछ व्यक्ति इसके लिए जिम्मेदार थे। वास्तविकता की जानकारी मिलने पर श्यामा भैय्या की गलतफहमी दूर हो गयी। जोशी जी ने मालूम पड़ने पर भी तथाकथित चुगलखोरों से अपने मधुर संबंधों में कटुता नहीं आने दी। झुके भी नहीं। दावतों या काकटेल पार्टियों के आकर्षण या उनके प्रभाव से दूर। मैंने उन्हें पाकिस्तान में भी कार्य करते देखा, जब 1988 में 12 दिन उनके साथ था। वहीं निष्ठा, प्रतिबद्धता एवं कलम और देश के प्रति समर्पण का भाव। वहाँ भी उनके सबसे मधुर संबंध । मुझे अनेक महत्वपूर्ण लोगों से मिलाया। अनेक से पारिवारिक मैत्री। मैं भी परिवार के साथ गया था। भारत-पाक के बीच राजनीतिक या अन्य किस्म की दूरी से पैदा की गयी या हुई कटुता नहीं। ऐसा लगा जैसे हम भारत के ही एक हिस्से में हैं। व्यवहार एवं स्वभाव की यह विलक्षण प्रतिभा थी जोशी जी में। पाकिस्तान में उनके व्यापक मित्रमंडल का मैं चश्मदीद गवाह हूँ।

स्वर्गीय व्ही.टी. जोशी

कलम न रूकी न झुकी

टाइम्स ऑफ इंडिया ने सेवा में एक्सटेंशन दिया। पाकिस्तान में उनके कार्यकाल को बढ़ा दिया। फिर रिटायर हो गए। भोपाल में बसने का फैसला किया। तत्काल देश के प्रमुख अंग्रेजी दैनिक

श्री जोशी की दृष्टि रचनात्मक एवं सकारात्मक थी। अपने लेखन में, सामान्य व्यवहार में, मैत्री में या सामाजिक रिश्तों में उनकी यही दृष्टि रही। इसलिए किसी से उनकी खटकी नहीं।

हिन्दू ने उन्हें साथ ले लिया। काफी समय तक उससे जुड़े रहे। कलम चलती रही। वहाँ से मुक्त हुए तो कुछ दिन स्वतंत्र लेखन चला। तब तक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय ने फीचर सेवा की शुरुआत की तो ऐसा योग्य, अनुभवी और कलम का धनी कहाँ मिलता? फीचर सेवा भी चलायी और विश्वविद्यालय की पत्रिका शुरू हुई तो उससे जुड़ गए। विश्वविद्यालय और पत्रिका को अनुभवी, देश-विदेश के भ्रमण से प्रत्यक्ष जानकारी से युक्त कलम का धनी व्यक्ति मिल गया। आखिरकार द्विभाषी पत्रिका के लिए अंग्रेजी का जानकार और पत्रकारिता के भी सिद्धहस्त व्यक्ति की जरूरत थी। अर्थात जोशी जी की कलम जीवन पर्यन्त चलती रहीं-दौड़ती रही। मुझे 1958 में दादा माखनलाल चतुर्वेदी से खण्डवा में हुई भेंट की याद आती है। उन्होंने भेंटवार्ता में कहा था- ''पत्रकार के लिए सबसे बड़ी चीज है उसकी कलम। यह न कभी रुकनी चाहिए, न झुकनी चाहिए। कभी भी न अटकनी चाहिए और न भटकनी चाहिए।'' जोशी जी की कलम आयु के लगभग 82 वर्ष में भी गतिशील रही। वे आजीवन कलम के प्रति वे समर्पित और प्रतिबद्ध रहे।

टेक्नालाजी से पत्रकारिता में

मूलतः कर्नाटक प्रदेश (तब मैसूर राज्य) के बेलगाम जिले के एक गांव का उनका सुशिक्षित परिवार बेंगलोर में बस गया है। जोशी जी मैसूर विश्वविद्यालय की शिक्षा के बाद वाराणसी गए, काशी हिंदू विश्वविद्यालय में कॉलेज ऑफ टेक्नालाजी में पढ़ने (पूर्व मुख्यमंत्री स्व. श्यामाचरण शुक्ल भी इस कॉलेज के विद्यार्थी रहे थे।) बाद में इरादा बदल गया। पत्रकारिता में आने का इरादा किया। पीटीआई से जुड़ गए। पहले मुंबई में पीटीआई में कुछ समय रहकर टाइम्स ऑफ इंडिया से जुड़े। टाइम्स ने पहले गोवा बेजा। वहाँ से फरवरी 1965 में भोपाल आ गए। जोशी जी के पहले टाइम्स के पी.सी. टंडन भोपाल में थे। उन्हें लखनऊ भेजा तो जोशी जी भोपाल आए। शायद टंडन जी से संपर्क हुआ होगा, तो जोशी जी मुझसे मिले। हमारी मुलाकात घनिष्ठ मित्रता में और परिवारिक निकटता में बदल गयी। जब आए तो अंग्रेजी, कन्नड़ और मराठी के जानकारी पर हिंदी का अल्पज्ञान। मैं विधान सभा की सारी कार्यवाही उन्हें अंग्रेजी में समझाता। उम्र में मुझसे करीब आठ साल बड़े थे। जो मित्रता हुई, वह अंत तक निभती रही। उनके समूचे परिवार से अच्छा परिचय रहा। 1967 में जब बेंगलूरु गया तो उनके घर ही ठहरा था। उनके पिताजी चिकित्सक थे। सज्जनता, सादगी और सदाशयता की प्रतिमूर्ति। स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े रहे एक भाई पत्रकार। एक बहनोई कर्नाटक राज्य सरकार में डायरेक्टर हेल्थ सर्विसेज। दोनों बहने सुशिक्षित और जोशी जी की तरह सरल, स्नेहपूर्ण, सेवाभावी। माता जी साक्षात देवी जैसी। जहाँ तक परिवार का सवाल है, उनका बड़ा बेटा भोपाल में पढ़कर कनाडा व अमेरिका पायलट बनने गया, वहाँ उसका विवाह भी हो गया था, लेकिन अचनाक अस्वस्थ हुआ और निधन हो गया। छोटा बेटा सुनील भोपाल में बीएचइएल का एक सहायक उद्योग चला रहा है, उनके साथ था। श्रीमती जोशी भी उनके साथ भोपाल आयीं और भोपाल की होकर रह गईं। उनके परिचय का दायरा बहुत विस्तृत है। जोशी जी की बहू जो केन्द्रीय विद्यालय में शिक्षिका है, मध्यप्रदेश की है और परिवार की अभिन्न है। यह सुखद संयोग है कि पूरे परिवार पर जोशी जी की शालीनता, सदाशयता, सरलता विश्वसनीयता और सेवाभाव की छाप है।

भोपाल में पत्रकार के बतौर पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र से लेकर शिवराज सिंह चौहान तक सारे मुख्यमंत्रियों, राज्यपालों, सभी दलों के नेताओं, समाजसेवियों, अफसरों शिक्षाशास्त्रियों से उनकी पटी। ठाकुर गोविंद नारायण सिंह से राजनेता के अलावा बीएचयू (बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी) के भूतपूर्व छात्र वाला रिश्ता (यह रिश्ता ज्यादा आत्ममीयता वाला होता है) वही निकटता स्वर्गीय मारूतिराज सिंह चौधरी से। जोशी जी की विशेषता यह थी कि उनका राजनीतिक घटनाक्रम का विश्लेषण, व्यक्तित्वों एवं राजनेताओं की परख एवं टिप्पणी किसी किस्म के लगाव या दुख से दूर संतुलित और विषयनिष्ठ होती। गरिमा और मर्यादा का सदैव ध्यान रखते थे। सबका विश्वास जीता इसकी एक मिसाल। 1967 के दलबदल एवं संविद के गठन की बात। गोविन्द नारायण सिंह का उन पर इतना भरोसा कि दलबदल करने वाले सारे विधायकों की सूची उन्हें पढ़ा दी। वे जानते थे कि यह न तो लीक होगी और न इसका दुरुपयोग होगा।

जोशी की विशेषता यही थी कि मिश्र जी हों या श्री गोविन्दनारायण, मूलचंद देशलहरा हो या कन्हैयालाल खादीवाला, श्यामचरण शुक्ल हों या वीरेन्द्र कुमार सखलेचा, अर्जुनसिंह हों या सुन्दरलाल पटवा या मोतीलाल वोरा, तख्तमल जैन हों या राजमाता सिंधिया अथवा माधवराव सिंधिया सबसे मधुर संबंध थे। सबका विश्वास जीता। प्रशासन-तंत्र में भी ऐसे संबंध। पत्रकार जगत में भी विभिन्न विचारधारा वाले सभी उनके परम मित्र रहे।

मध्यप्रदेश की चिंता

उन्होंने पूरे प्रदेश का भ्रमण किया। जब बस्तर महाराजा प्रवीरचन्द्र भंजदेव के पुलिस कार्रवाई में मारे जाने पर जल रहा था वे बस्तर गए। जब वनवासी जिला झाबुआ सुर्खियों में आया तो वे वहाँ भी गए। छत्तीसगढ़, विन्ध्यप्रदेश, मालवा, ग्वालियर अंचल सर्वत्र गए। कई प्रवासों में थी भी साथ रहा। आम चुनावों में हमने मिलकर प्रदेश भ्रमण किया। राज्य के नेशनल पार्कों में गए। वन्य पशु एवं वनों से जुड़ी समस्याओं, जल या नदी पानी विवाद, अंतर्राज्यीय विवादों पर मजबूती से कलम चलायी। राष्ट्रीय हितों का ध्यान रखा तो मध्यप्रदेश के हितों पर कुठाराघात पर भी लिखा। नर्मदा घाटी योजना में प्रदेश के हितों की अनदेखी को जहाँ उजागर किया वहीं राज्य के नेतृत्व की कमजोरी अथवा दिशाहीनता पर टिप्पणी से भी कभी गुरेज नहीं किया। राज्य की अनेक विकास योजनाओं, परियोजनाओं उनके गुण-दोषों पर चर्चा की। बिजली, सड़क, पर्यावरण, खाद्य, कृषि, ग्रामीण अंचल की समस्याओं पर मजबूती और दूरदर्शिता के साथ कलम चलायी। वे बाहरी न रहकर मध्यप्रदेशी होकर भी राष्ट्रीय दृष्टि वाले पत्रकार थे।

सकारात्मक दृष्टि

यह सब इसलिए संभव हुआ क्योंकि उनकी दृष्टि रचनात्मक एवं सकारात्मक थी। अपने लेखन में, सामान्य व्यवहार में, मैत्री में या सामाजिक रिश्तों में सभी में उनकी यही दृष्टि रही। इसीलिए किसी से उनकी खटकी नहीं।

जोशी जी की एक विशेषता यह थी कि वे दोस्तों के दोस्त थे, तो फिर सुख-दुख सभी अवसरों पर साथ। मुझे याद आता है कि आपातकाल लगा तब मैं जबलपुर में दैनिक युगधर्म का सम्पादक था। भोपाल से 1972 में सम्पादक होकर जबलपुर चला गया था। आपातकाल लगते ही अखबार के प्रकाशन पर पाबंदी लग गयी। सारे सहयोगी सड़क पर आ गए। इतनी गनीमत रही कि सरकारी-तंत्र ने मुझे परेशान नहीं किया। तब प्रकाशचन्द्र सेठी प्रदेश के मुख्यमंत्री थे। पाबंदी हटाने के लिए भोपाल और दिल्ली के कई चक्कर काटे। कई नेताओं और प्रशासकों से मिले। उस संकट में भी जब कई पत्रकार मित्र और कथित पत्रकार नेता तथा अखबारी आजादी पर लेक्चर पिलाने वाले पत्रकार नेता भी बिदकते थे। तब जोशी जी ने साथ दिया। मनोबल बढ़ाया। कार में मुझे सबसे मिलाने ले जाते। तब तक मैं मिलता बाहर कार में बैठे रहते। ऐसे शुभचिंतक, संकट के साथी और मित्र कम मिलते हैं। मैं भोपाल से जबलपुर, वहाँ से दैनिक ट्रिब्यून के लिए 1978 में चंडीगढ़ गया। 1990 में माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय की स्थापना के

> ***...वन पशु एवं वनों से जुड़ी समस्याओं, जल या नदी पानी विवाद, अंतर्राज्यीय विवादों पर मजबूती से कलम चलायी। राष्ट्रीय हितों का ध्यान रखा तो मध्यप्रदेश के हितों पर कुठाराघात पर भी लिखा... वे बाहरी न रहकर मध्यप्रदेशी होकर भी राष्ट्रीय दृष्टि वाले पत्रकार थे।***

लिए भोपाल आकर 1995 में फिर चंडीगढ़ (पंचकूला) लौट आया। लेकिन लेकिन हमारी मित्रता यथावत् रही। 1988 में उनके आग्रह पर ही मैं पाकिस्तान की यात्रा पर गया और ट्रिब्यून ट्रस्ट ने इसके लिए अनुमति दी। पाकिस्तान घुमाया। लौटकर मैंने 25 लेख लिखे, जो चर्चित हुए। खूब जानकारी जुटाने में मदद की, ऐसे थे जोशी जी, कलम के सिपाही और कलमकारों के हितैषी।

मिशनरी पत्रकार

कभी पत्रकारिता मिशन होती थी, आज वह व्यापार, व्यवसाय, बाजार, पूँजी निवेश और पूँजी अर्जन का माध्यम बन गयी है। अखबारी आजादी पर बाजारी ताकतें और बहुराष्ट्रीय कंपनियां हावी हैं। आज अनेक अखबार मालिक दावा करते हैं कि अच्छा ब्रांड या प्राडक्ट बिकता है। तो क्या पत्रकारिता प्राडक्ट बन जायेगी? प्रेस कौंसिल के पूर्व अध्यक्ष जस्टिस सावंत ने 2001 की अपनी रिपोर्ट में स्वीकार किया है कि अखबारों पर आज मालिक और मैनेजमेंट हावी हैं क्योंकि उनकी सोच है कि अखबार केवल संपादकीय सामग्री से ही नहीं बिकता। नतीजा यह हुआ है कि इससे सम्पादकीय आजादी सिकुड़ गयी है। पत्रकारिता के समक्ष यह बड़ी चुनौती है, जो विचारणीय है।

हमें महसूस होता है कि हमने एक मिशनरी पत्रकार को देखा, उससे मैत्री की, उससे प्रेरणा ली, उसके साथ कार्य किया। यह सौभाग्य के क्षण थे। कलम के उस सिपाही को नमस्कार-विनम्र श्रद्धांजलि। उसकी प्रतिबद्धता को नमन! ईश्वर उसे अपने पास स्थान दे। परिवार को अभाव को सहने की शक्ति दे। मित्रों को प्रेरणा देता रहे। उन्हें भूल पाना मेरे लिए कठिन है। वह जब याद आए, बहुत याद आए। सबसे बढ़कर तो वे बहुत अच्छे इंसान थे। इंसानियत से ओतप्रोत थे।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और हरियाणा साहित्य अकादमी के पूर्व निदेशक हैं।